आर्थिक समृद्धि योग व ज्योतिष

सभी की आर्थिक स्थिति एक सी नहीं रह सकती, यह समयानुसार बदलती रहती है। अशुभ दशाओं व गोचर से धनवान भी विभिन्न अवस्था में तथा शुभ दशाओं व गोचर से निर्धन भी अपने भाग्य तथा पुरुषार्थ से धनवान बनते देखे गए हैं व सभी कर्म भी प्राय: अर्थ केंद्रित ही होते हैं। एक बात और बहुत प्रमुख जो हम कहना चाहेंगे कि यह सब आर्थिक संपन्नता व विपन्नता यह व्यक्ति के प्रारब्ध अनुसार फलित होते हैं। व्यक्ति अपने पूर्वजन्मकृत कर्मों के अनुसार ही इस जन्म में सुख सुविधाओं का भोग करता है।

जन्मकुंडली के माध्यम से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति का पता लगाया जा सकता है....

प्रतीक्षा

जन्मकुंडली में आर्थिक स्थिति का विचार करने के लिए कुंडली के लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम अष्टम व नवम, दशम व एकादश भावों का विचार किया जाना आवश्यक होता है।

गुरु धन व लाभ कारक साथ ही शुक्र भोग कारक है। इनकी बली स्थिति भी बहुत जरूरी है।

जब तक बुद्धि प्रबल नहीं कुछ नहीं इसलिए बुद्धि भाव द्वितीय, पंचम के साथ–साथ बुध की स्थिति देखना भी नितांत आवश्यक हो जाता है।

- लग्न से व्यक्ति की शारीरिक क्षमता।
- द्वितीय भाव से धन, कुटुंब स्थिति।
- चतुर्थ भाव से अचल संपत्ति व वाहन, भवन सुख।
- पंचम भाव से आकस्मिक धन प्राप्ति।
- सप्तम व दशम भाव से व्यावसायिक स्थिति का आकलन।
- लाभ भाव से सभी प्रकार के आय का साधन।
- अष्टम भाव से वसीयत, ससुराल से धन प्राप्ति।
- इन सब में सबसे महत्वपूर्ण स्थिति नवम भाव भाग्य भाव का आकलन करना, भाग्य की अनुकूलता/प्रतिकूलता बहुत जरूरी जिसको हम सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं।

क्योंकि लग्न भाव लग्नेश के साथ–साथ भाग्य भाव भाग्येश की निर्बल व सबल स्थिति बहुत ही महत्वपूर्ण होती है देखना क्योंकि इन भावेश का सभी भावों पर प्रभाव पड़ता है।

इसके साथ ही अहम बात व्यक्ति की चंद्र कुंडली का बलवान होना अति आवश्यक हो जाता है। चंद्र स्थिति अर्थात एक मजबूत मनःस्थिति का होना बहुत जरूरी होता है।

साहित्यिक शास्त्रीय संदर्भ

आर्थिक संपन्नता के बारे में हमारे शास्त्र क्या कहते हैं, आइये देखते हैं।

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 14 श्लोक 3, 4, 5 के अनुसार

धनाधिपो गुरुःयस्यधनभावगतो भवेत्।
भौमेन सहितो वापि धनवान स नरो भवेत्।।
धनेशे लाभभावस्थे लाभेशे वा धनं गते।
तावुभौ केंद्रकोणस्थौ धनवान मानवो भवेत्।।

यदि धन भावेश गुरु हो अर्थात वृश्चिक या कुम्भ लग्न हो तथा गुरु द्वितीय भाव में ही हो, साथ मे मंगल भी तो मनुष्य धनवान होता है।

धनेश यदि एकादश स्थान में हो या लाभेश धनस्थान में गया हो अथवा ये दोनों केंद्र, त्रिकोण में गए हों तो मनुष्य धनवान होता है।

धनेशे केंद्रराशिस्थे लाभेशे तत त्रिकोणगे।
गुरुशुक्रयुते दृष्टे धनलाभं दिशेद बुधः।।

यदि धनेश, लग्न में हो तथा लाभेश, धनेश से 1, 5, 9 में हो, साथ में गुरु, शुक्र की दृष्टि हो तो धन लाभ होता रहता है।

फलदीपिका योगाध्याय 6 श्लोक 19, 20 अनुसार

चंद्राद्वा वसुमांसतथोपचयगैः
लग्नात्समस्तैः
शुभेश्चन्द्राद्वयोम्न्यमलाह्वयः
शुभखगैःयोगो विलग्नादपि।
जन्मेशेसहिते विलग्नपतिना
केन्द्रेऽधिमित्रःक्षगे लग्नं पश्यति

कश्चिदत्र सुबलवान्योगो भवेत् पुष्कलः।।

लग्न या चंद्रमा से 3, 6, 10, 11 में सभी शुभ ग्रह (बुध, गुरू, शुक्र) हों तो 'वसुमान योग' होता है।

लग्न या चंद्र से दशम में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

जन्मराशीश व लग्नेश दोनों केंद्र में अपने अधिमित्र की राशि में हों और लग्न पर किसी बलवान ग्रह की दृष्टि हो तो 'पुष्कल योग' होता है।

इस योग में लग्नेश व राशीश साथ हो या अलग हो, परंतु केंद्र में अधिमित्र क्षेत्र में हो, यह जरूरी है।

तिष्ठेयुः स्वगृहे सदा वसुमति द्रव्याण्यनल्पान्यपि क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः सम्पद्युतो नीतिमानः।

श्रीमान पुष्कलयोगजो नृपवरैः सम्मानितो विश्रुतः स्वाकल्पाम्बरभूषितः शुभवचाः सर्वोत्तमः स्यात्प्रभुः।।

वसुमान योग में मनुष्य के घर मे बहुत धन होता है। अमला योग में जमीन जायदाद का स्वामी, धनी, पुत्रवान, प्रसिद्ध, सम्पत्तिशाली व नीतिकुशल होता है।

पुष्कल योग में बड़े राजाओं से सम्मानित, प्रसिद्ध, उत्तम वस्त्र व आभूषण पहननेवाला, सुंदर वाणी बोलने वाला, सर्वोत्तम व सामर्थ्यशाली होता है।

कुछ महत्वपूर्ण ज्योतिषीय योग कुंडली में जो कि आर्थिक संपन्नता के योग बनाते हैं।

1) पारिजात योग—लग्नेश का राशीश जिस राशि में स्थित हो, उस राशि का स्वामी या लग्नेश के राशीश द्वारा गृहीत नवमांश का स्वामी केंद्र/त्रिकोण, स्वराशि, उच्च राशि में बैठा हो तब यह योग बनता है....यह योग व्यक्ति को प्रसिद्ध, विलक्षण, धनी, वाहनों से युक्त व परंपराओं व रीति रिवाजों को मानने वाला बनाता है।

2) पर्वत योग———पर्वत योग में लग्नेश उच्च या स्वराशि का होकर केंद्र/त्रिकोण में हो या लग्नेश और द्वादशेश एक दूसरे से केंद्र में या शुभ ग्रह केंद्र में और छठा व आठवां भाव अशुभ प्रभाव से मुक्त हो तो यह योग बनता है।

पर्वत योग युक्त व्यक्ति धनवान, समृद्धशाली, शहर का मुखिया, परोपकारी और एक अधिकार सम्पन्न व्यक्ति होता है।

3) काहल योग———— जब कुंडली मे चतुर्थेश व नवमेश एक दूसरे से केंद्र में हो और लग्नेश बली हो तब काहल योग बनता है।

काहल योग से युक्त व्यक्ति हठी, साहसी, एक सेना व गांव का मुखिया, उदार, अप्रसिद्ध, धनी, जीवन के अंतिम भाग में सुखी होता है।

4) लक्ष्मी योग——लग्नेश अति बलवान हो व नवमेश केंद्र स्थान में अपनी मूलत्रिकोण, उच्च या स्वराशि में स्थित हो तो लक्ष्मी योग होता है।

इस योग में जन्मा जातक सुंदर, धर्मात्मा, प्रचुर धनवान, आर्थिक सम्पन्न, अधिक भू संपत्ति वाला, विद्वान, यशस्वी राजा, लोक प्रसिद्ध व पुत्रवान होता है।

5) चंद्र, मंगल योग———यह योग चंद्र की मंगल से युति से बनता है। इस योग में जन्मा जातक प्रचुर धनार्जन करने वाला व धन संचित करने वाला होता है।

ऐसे ही अन्य बहुत योग होते हैं जैसे शंख योग, केदार योग, कमल योग आदि जो जातक की कुंडली में होने पर आर्थिक समृद्धि देते हैं।

आर्थिक संपन्नता के ज्योतिषीय सूत्र

• धन समृद्धि प्राप्ति में सबसे पहले लग्न/लग्नेश के बलाबल के साथ–साथ धन प्रदायक भाव/भावेशों का आपसी संबंध बहुत महत्वपूर्ण होता है। जैसे द्वितीय भाव (धन भाव), पंचम व नवम भाव (लक्ष्मी भाव), एकादश (लाभ भाव) व उनके भावेशों का आपसी शुभ संबंध व केंद्र, त्रिकोण में होने पर धन प्राप्ति में सहायक होता है।

• यदि लग्नेश का नवांशपति द्वितीयेश का मित्र होकर स्वक्षेत्री या केंद्र व त्रिकोण भाव में मित्रक्षेत्री हो तो जातक अपने परिश्रम से धन–संपदा प्राप्त करता है।

• लग्नेश यदि धनेश व भाग्येश के साथ कर्म स्थान(दशम) में स्थित हो तो भी जातक अपने बल पर आर्थिक संपन्नता प्राप्त करता है।

• यदि लग्नेश चतुर्थ में और चतुर्थेश लग्न में हो व चतुर्थ भाव शुभ दृष्ट हो तो भी जातक अपने पराक्रम से भूमि,भवन प्राप्त करता है।

• अकस्मात् धन प्राप्ति में पंचम भाव के साथ–साथ अष्टम भाव से भी विचार किया जाता है, यदि पंचम में चंद्र स्थित हो व उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो लॉटरी से धन मिलता है,साथ ही राहु का अकस्मात् धन प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान रहता है, वैसे भी अधिकतर कुंडलियों में राहु दशा में ही जातक की उन्नति देखी है, यदि वह शुभ हो व उसका धन भाव/धनेश या लाभ भाव/लाभेश या फिर लग्न/लग्नेश से संबंध बनता है तो।

• यदि द्वितीयेश व चतुर्थेश शुभ ग्रह की राशि में शुभग्रहों से युति या दृष्टि में होकर स्थित हो तो भूमि में गड़ी संपत्ति मिलती है।

• एकादशेश और चतुर्थेश चतुर्थ स्थान में हो और चतुर्थेश शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को अकस्मात् धन मिलता है।

• यदि लग्नेश द्वितीय स्थान में और द्वितीयेश एकादश स्थान में हो व एकादशेश लग्न में स्थित हो तो इस योग से भी जातक को भूगर्भ से संपत्ति मिलती है।

• लग्नेश शुभ ग्रह हो और धन स्थान में स्थित हो या धनेश आठवें स्थान में स्थित हो तो गड़ा हुआ धन प्राप्त होता है।

• सप्तमेश व द्वितीयेश एक साथ हो और उन पर शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो, चतुर्थेश सप्तमस्थ हो और शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित हो व इन दोनों में मित्रता हो।

साथ ही सप्तमेश व नवमेश का संबंध व शुक्र साथ हो, बलवान धनेश सप्तमेश शुक्र से युक्त हो तो ससुराल से धन प्राप्ति होती है।

आइये अब कुछ उदाहरण कुंडली लेते हैं...

वृश्चिक लग्न का जातक लग्नेश मंगल धनेश, पंचमेश गुरू व नवमेश चंद्र के साथ कर्म स्थान पर स्थित है..कर्मेश सूर्य लाभ स्थान स्थित राहू/केतु एक्सिस जिसने इनको संघर्ष के साथ–साथ सफलता भी दिए व पंचम स्थित राहु जो कि गुरु नियंत्रक उसकी महादशा में जातक को कर्म क्षेत्र में पदोन्नति मिलती गयी व जातक आज उच्च अधिकारी

उदाहरण कुंडली––1

21/9/1968, 12.05 रात्रि

छिंदवाड़ा (मध्यप्रदेश)

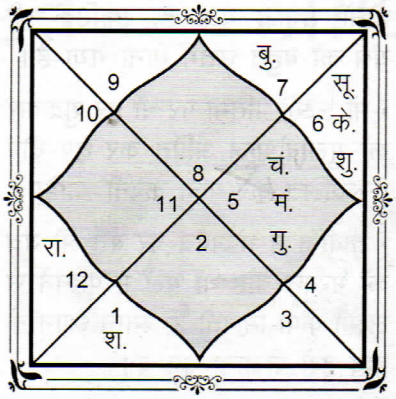

के रूप में कार्यरत है.....जातक शुरू से ही बहुत परिश्रमी व बहुत कम आयु में 19 साल में जॉब पर लगे व आज स्वयं की मेहनत से आर्थिक रूप से समृद्धशाली व्यक्ति हैं।

उदाहरण कुंडली––2

3/11/1968, 10.15 रात्रि

विशाखापट्टनम

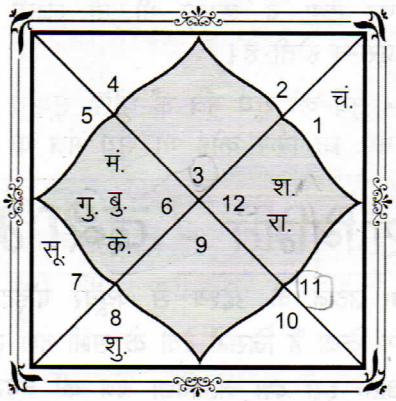

मिथुन लग्न की कुंडली, लग्नेश बुध षष्ठेश मंगल व सप्तमेश गुरू युति के साथ दशम पर दृष्टि दे रहे हैं...

धनेश चंद्र यहाँ लाभ भाव में स्थित व लाभेश मंगल चतुर्थ स्थित लग्नेश बुध व कर्मेश गुरु युति में स्थित हैं, जो कि भूमि, भवन वाहन सुख प्रदान कर रहे हैं, साथ ही भाग्येश शनि कर्मभाव स्थित मीन राहु युति में व शुक्र दृष्टि भी द्वादश भाव पर जो जातक को सभी सुख प्रदान कर रही है। दशा भी जातक को शुरू से ही तृतीयेश सूर्य, द्वितीयेश चंद्र, आयेश मंगल व राहु की मिली जो जातक की कुछ परेशानियों के साथ उत्तरोत्तर आर्थिक समृद्धि में भी लाभदायक रही.....

उदाहरण चार्ट––3

27/4/1951, 5.00 प्रातः, हैदराबाद

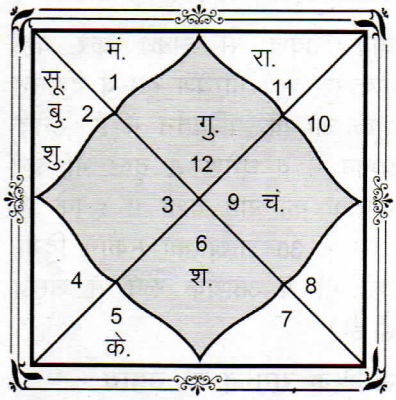

मीन लग्न का जातक। लग्नेश लग्न स्थित व चंद्र कर्म भाव स्थित जातक को कर्मठ बना रहे हैं, फिर चंद्र पंचमेश होकर दशम में स्थित हैं.... आयेश/लाभेश शनि भी सप्तम से लग्न व चतुर्थ पर दृष्टि दे रहे हैं।

पराक्रमेश शुक्र की दृष्टि भी भाग्य भाव पर...नौकरी कारक सूर्य उच्च होकर धनेश के साथ स्थित है....दशा भी इनको मंगल, राहु, गुरु व शनि की मिली, जो इनके उत्तरोत्तर प्रगति व आर्थिक समृद्धि में सहायक सिद्ध हुई।

उदाहरण कुंडली––4

मकर लग्न का जातक, लग्नेश शनि वक्री होकर लग्न पर दृष्टि दे रहे, साथ में लाभेश उच्च मंगल लग्न में स्थित.. व धन भाव में राहु स्थित जो अकस्मात् धन दिलाने में मुख्य भूमिका देता है वह भी जब वह धन

5/11/1969, 1.30 सायं, सूरत

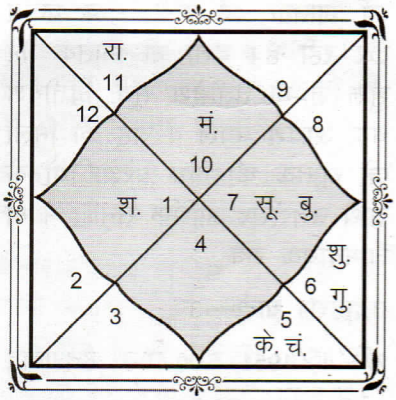

भाव/भावेश से संबंध करें....यहाँ अष्टमेश सूर्य भाग्येश बुध व दशमेश शुक्र जो कि परिवर्तन में है, उनके प्रभाव में व धनेश से दृष्ट भी, इन जातक को राहु दशा में इनके ही बॉस ने 30 लाख का मकान दिया, वैसे भी ये आर्थिक रूप से समृद्ध हैं ही।

आर्थिक समृद्धि के उपाय

• ऋग्वेदोक्त श्री सूक्त का पाठ घी आहुति के साथ करना चाहिए, ऐसा करने से लक्ष्मी घर में प्रवेश करती हैं।

• चांदी या फिर तांबे के बने सिद्ध श्री यंत्र की स्थापना कर लाल फूल अर्पित कर पूजा करना चाहिए, यह यंत्र जातक को आर्थिक व भौतिक दोनों समृद्धि देता है, स्फटिक श्री यंत्र को बहुत उत्तम माना गया है।

• माँ लक्ष्मी प्रतिमा पर भी हर शुक्रवार को गुलाब फूल अर्पित कर धूप दीप प्रज्ज्वलित कर पूजा करनी चाहिए।

• ताबीज में भोजपत्र पर बने श्री यंत्र को भरकर बांह या गले में पहनने से लक्ष्मी कृपा मिलती है, स्नान ध्यान के बाद इसे रोजाना धूप दे।

• सूर्यास्त के बाद कभी भी घर पर झाड़ू न लगाएं, रात को जूठे बर्तन रसोई घर में न रखें, उन्हें स्वच्छ धोकर ही रखें, ऐसा करने से भी माँ लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।

• काली हल्दी पर सिंदूर लगाकर गूगल धूप दें, एक चांदी का सिक्का व सिंदूर लगी काली हल्दी को लाल कपड़े में लपेटकर घर के मुख्य द्वार पर टांग दें, इससे भी माँ लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।

• सूर्य की सूर्य मंत्र ऊँ घृणिः सूर्याय नमः या फिर कोई भी सूर्य मंत्र के साथ अर्घ्य देकर उपासना करें व हमेशा बहुत साफ–सफाई से रहें, इससे माँ लक्ष्मी की कृपा दृष्टि बनी रहती है।

• लक्ष्मी प्राप्ति के लिए दिवाली का समय बहुत महत्वपूर्ण होता है, दीपोत्सव के उन पांच दिनों में संध्या समय श्री सूक्त का पाठ, कनकधारा व विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें व रात 12 बजे देसी कपूर और शुद्ध रोली लेकर उसे जला दें, जब यह जल कर राख हो जाये तब इस राख को लाल कपड़े में बांध कर तिजोरी में रख दें, इससे धन में वृद्धि होती है।

• पांच साबुत सुपारी, पांच कौड़ी और थोड़ी सी काली हल्दी लेकर लाल कपड़े में बांध लें और इसे दीपावली के लक्ष्मी पूजन में रखें व दूसरे दिन इसे अपनी तिजोरी में रखें, इससे आर्थिक उन्नति होती है।

पता : 1187/9ए2, जय प्रकाश नगर
अधारताल, जबलपुर, मध्यप्रदेश
पिनकोड : 482004
दूरभाष : 9993331069

फ्यूचर पॉइंट द्वारा निर्मित - दश महाविद्या यंत्र

दश महाविद्या यंत्रों से मनोवांछित लाभ उठाने के उद्देश्य से फ्यूचर पॉइंट ने शास्त्रानुसार दश महाविद्या यंत्र का निर्माण किया है जिसमें देवी के सभी दश रूपों के यंत्रों को समाहित किया गया है। अतः इस दश महाविद्या यंत्र की नवरात्रा में पूजा व आराधना से हमें मां के सभी रूपों से कृपा प्राप्त होती है, घर में सुख-समृद्धि व शांति बनी रहती हैं, व्यापार में उन्नति होती है, शत्रुओं से रक्षा होती है, मन के भय का अंत होता है, आर्थिक उन्नति के साथ-साथ मोक्ष भी प्राप्त होता है, जीवन ऐश्वर्यशाली बनता है, अनुकूल विवाह व पौरूष की प्राप्ति होती है, उत्तम विद्या, ज्ञान और ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है

यंत्र को प्राप्त करने के लिए संपर्क करें : 9911865656, 01140541000, 40541017, 1019

मूल्य : फ्रेमसहित ₹1100
फ्रेमरहित ₹800